हिन्दुस्तान 06-08-2014

# आंखों में सपने, हाथों में किताब लेकर आए

**ओरिएंटेशन**

कानपुर। नेशनल शुगर इन्स्टीट्यूट (एनएसाई) में पहली बार 30 फीसदी ऐसे छात्रों ने प्रवेश लिए हैं जो उत्तर प्रदेश से इतर अन्य राज्यों से आए हैं। पहली बार यहां सात छात्राओं ने प्रवेश लिया है। मंगलवार को ओरिएंटेशन के दौरान यहां भारतीय संस्कृति की विविधता नजर आई। चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय (सीएसए) में सीनियर छात्र-छात्राओं ने जूनियर छात्र-छात्राओं का तिलक कर स्वागत किया। छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय (सीएसजेएमयू) के मास्टर इन सोशल वर्क्स (एमएसडब्ल्यू) के छात्रों को ओरिएंटेशन में समाज सेवा का महत्व भी बताया गया।

## एनएसआई में नई शुरुआत

कई वर्षों के बाद एनएसआई की न सिर्फ सीटें भर गई बल्कि प्रवेश लेने वालों में देबारू मुखोपाध्याय (पश्चिम बंगाल), जगदीश महोहरन, नन्थ कुमार और वसंथन केथी (तमिलनाडु) ने शुगर टेक्नालॉजी में प्रवेश लिया है। पुष्पांजलि वेदुला, आकांक्षा मिश्रा, रिया, अंजलि वर्मा, अंजलि कनौजिया, आकांक्षा अग्निहोत्री और रेनू पॉल ने यहां प्रवेश लिया है। निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन ने ओरिएंटेशन में छात्रों को हाजिरी के सख्त नियम बताए। एजुकेशन इन्चार्ज जेपी श्रीवास्तव और परीक्षा नियंत्रक एनके बनर्जी ने कोर्स के नियमों की जानकारी दी।

## सीएसए में तिलक कर फ्रेशर्स का स्वागत

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय (सीएसए) में बीएससी (ऑनर्स) एजी, बीएससी (ऑनर्स) वानिकी, बीएससी (ऑनर्स) हार्टीकल्चर एवं बीएससी (ऑनर्स) गृहविज्ञान के 218 नवागान्तुक छात्र और छात्राओं के सम्मान में सीनियर छात्रों ने फ्रेशर पार्टी का आयोजन किया। कुलपति प्रोफेसर मुन्ना सिंह और उनकी पत्नी बीना सिंह ने छात्र-छात्राओं को आशीर्वाद दिया। शुरुआत में सीनियर छात्रों ने जूनियर छात्रों को तिलक लगाकर सम्मानित किया। जूनियर छात्रों ने एक-एक करके अपना परिचय दिया। जूनियर व सीनियर छात्रों ने नृत्य, नाटक, संगीत और सोलो डान्स पेश कर खूब तालियां बटोरीं। इस अवसर पर डीन डॉ. एमपी यादव, डीन डॉ. एनबी सिंह, डॉ. रेखा दयाल और डॉ. आरके यादव उपस्थित थे। संचालन मीडिया प्रभारी डॉ. नौशाद खान ने किया।

**समाजसेवा जरूरी :** सीएसजेएमयू में एमएसडब्ल्यू के ओरिएंटेशन में हेड प्रोफेसर संदीप कुमार ने छात्र-छात्राओं से कहा कि यह कोर्स सीधे समाज सेवा से जुड़ता है। व्यवहारिक ज्ञान हासिल करने के लिए सभी को फील्ड वर्क में रुचि दिखानी चाहिए। इससे प्लेसमेंट में आसानी होती है।

नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में प्रदेश के अलावा देश के कई राज्यों से पढ़ने पहुंची छात्राएं काफी उत्साहित नजर आईं। • हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान 06-08-2014

# सुशासन से टॉप-200 में स्थान बना सकते हैं तकनीकी संस्थान

**राष्ट्रपति हुए मुखातिब**

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

आईआईटी और एनएसआई समेत देश भर के केन्द्रीय विश्वविद्यालयों और संस्थानों के शिक्षकों और छात्रों को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने मंगलवार को इस बात पर चिंता जताई कि 120 करोड़ की आबादी वाले देश का कोई भी विश्वविद्यालय या संस्थान विश्व के टॉप 200 में नहीं गिना जाता।

इसके लिए बेहतर प्रशासनिक व्यवस्था, पारदर्शिता और अनुशासन की जरूरत है। वह दिन दूर नहीं जब हमारे विश्वविद्यालय और संस्थान इस लक्ष्य को हासिल कर लेंगे। नेशनल नॉलेज नेटवर्क से जुड़े संस्थानों में वीडियोकान्फ्रेंसिंग के माध्यम से मुखातिब राष्ट्रपति ने 'लोकतंत्र और सुशासन' विषय पर पहले करीब 30 मिनट तक अपने विचार रखे और इसके बाद कुछ कलपितयों के जवाब दिए।

राष्ट्रपति ने लोकसभा चुनाव में युवा वर्ग की हिस्सेदारी से बढ़े वोट प्रतिशत को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि यह स्वस्थ लोकतंत्र की निशानी है।

## इसे अपनाकर बढ़ सकते हैं आगे

राष्ट्रपति ने भ्रष्टाचार को रोकने के लिए हुए प्रयासों को सराहते हुए कहा कि लोकतंत्र में सुशासन के लिए जरूरी है कि स्वायत्तता बढ़े और निर्णय लेने के लिए अधिकारों का विकेन्द्रीकरण भी जरूरी है। हमारे यहां अच्छी नीतियां तैयार करने वाले और अच्छे प्रशासक भी हैं। उन्होंने कहा कि युवा वर्ग और देश के हर वर्ग को लोकतंत्र मजबूत करने के लिए सक्रिय और सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

## हम कितने सफल रहे

नार्थ ईस्ट विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर प्रमोद शुक्ला ने राष्ट्रपति से सवाल किया कि हमारे लोकतंत्र को 64 वर्ष हो गए। क्या हम इस लोकतंत्र में सफल हो पाए हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि हमारा लोकतंत्र जनता को उनके मौलिक अधिकार देने में सफल रहा है। हमारी न्यायपालिका हमेशा बहुत सजग रही है। व्यक्तिगत अधिकारों के प्रति भी हमेशा सजगता का परिचय दिया है। हमारे संविधान में जरूरत के मुताबिक कई बदलाव हुए हैं। तमाम संस्थाएं और एनजीओ की भूमिका को भी नकारा नहीं जा सकता। हमारे देश की जनता लोकतंत्र में पूर्ण विश्वास रखती है।

## परिभाषाएं अलग क्यों?

एनआईटी सूरतगंज के निदेशक सुफल भट्टाचार्या ने राष्ट्रपति से पूछा कि विश्व बैंक और यूएनडीपी जैसा संस्थाएं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सुशासन की अलग-अलग परिभाषाएं क्यों देती हैं। अन्तरराष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं ने एड्स जैसे कार्यक्रमों में अच्छा काम किया है। वे अपनी परिस्थितियों के अनुसार कार्य करती हैं। उन्होंने कौटिल्य के अर्थशास्त्र का उदाहरण देते हुए सुशासन को समझाया। राष्ट्रपति ने कहा कि हमें विश्वसनीयता, जिम्मेदारी, उद्यमिता आदि के साथ भविष्य का स्वरूप तय करना चाहिए।

## आवश्यकता के मुताबिक हैं नीतियां

सेंट्रल यूनिवर्सिटी, गुजरात के कुलपति एबी रामाकृष्णनन ने राष्ट्रपति से पूछा कि सुशासन के लिए बड़ी चुनौतियां क्या हैं। इस पर राष्ट्रपति ने कहा कि सुशासन के लिए कई चुनौतियां हैं। हमारे देश की आबादी 120 करोड़ है। हमारे देश में विविधता अधिक है। अगर सुशासन की बात की जाए तो अधिकारों का विकेन्द्रीकरण आवश्यक है। पंचायती राज प्रणाली इसका उदाहरण है। दो लाख 57 हजार गांव पंचायत और 30 लाख गांव पंचायत हैं।

## उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कैसे आए गुणवत्ता

कश्मीर सेंट्रल यूनिवर्सिटी के कुलपति ने पूछा कि उच्च तकनीकी संस्थानों में सुशासन कैसे हो? राष्ट्रपति ने जवाब में कहा कि हमारे तकनीकी संस्थान हों या विश्वविद्यालय देश को अच्छे प्रशासनिक अधिकारी देते हैं। कुशल राजनीतिज्ञ देते हैं। पॉलिसी मेकर देते हैं। तक्षशिला और नालन्दा के गौरवमयी इतिहास का जिक्र करते हुए कहा अन्तरराष्ट्रीय पहचान वाले विदेश के दो विश्वविद्यालय अपने देश को एक भी प्रधानमंत्री नहीं दे सके। हमारे देश के संस्थान और विश्वविद्यालयों ने देश को प्रधानमंत्री दिए हैं और कुशल प्रशासक भी। हमारे आईआईटी, आईआईएससी व अन्य संस्थानों को समाज के लिए उपयोगी शोध पर जोर देना चाहिए।

राष्ट्रपति ने उच्च शिक्षा क्षेत्र की जरूरतों के साथ इस बात पर जोर दिया कि हम थोड़ा सा प्रयास कर विश्व के टॉप 200 संस्थानों में शामिल हो सकते हैं।
**प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन**
निदेशक, एनएसआई

## आईआईटी, एनएसआई में थी विशेष व्यवस्था

आईआईटी कानपुर में निदेशक इन्द्रनील मन्ना समेत अन्य शिक्षकों व छात्रों ने कॉन्फ्रेंसिंग सुनी वहीं एनएसआई में इसके लिए खास तैयारियां की गई थीं। एनएसआई निदेशक समेत संस्थान के सभी शिक्षकों और अन्तिम वर्ष के छात्रों ने उनका भाषण सुना। धन्यवाद ऋषिकान्त पाण्डेय ने दिया।